मैं मजदूर हूँ

डॉ. भगवत शरण उपाध्याय

जीवन परिचय

डॉ. भगवत शरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 में उत्तर प्रदेश, के बलिया जिले में उजियारपुर नामक स्थान पर हुआ। इन्होंने संस्कृत, हिन्दी साहित्य, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व का गहन अध्ययन किया। हिन्दी–साहित्य के ललित निबंधकारों में उनका स्थान महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट है। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका का संपादन किया तथा हिन्दी विश्वकोश संपादक मंडल के सदस्य भी रहे। ये मारीशस में भारत के राजदूत भी रहे। भारतीय संस्कृति पर देश–विदेश में दिए गए इनके व्याख्यान चिर–संग्रहणीय हैं। इनकी भाषा शैली तत्सम् शब्दों से युक्त साहित्यिक खड़ी बोली है। आपने विवेचनात्मक भावुकतापूर्ण, चित्रात्मक भाषा का प्रयोग तथा कहीं–कहीं रेखाचित्र शैली का प्रयोग किया है। ***विश्व साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला, कालीदास का भारत, कादम्बरी, ठूंठा आम, बुद्ध वैभव, सागर की लहरों पर, इतिहास साक्षी है*** *आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।*

मैं मजदूर हूँ, जीवनबद्ध श्रम शक्ति की इकाई।

मैं मेहनतकश मजदूर हूँ। आदमी के बनैलेपन से लेकर आज की शिष्ट सभ्यता तक की सीढ़ियों पर मेरे हथौड़े की चोट है। जमाने ने करवट ली है पर मैंने कभी जमीन से पीठ नहीं लगाई, सुस्ताने के लिए कभी फावड़े नहीं टिकाये। मेरे बाजू पर ज़माना टिका है, घुटनों पर अलकस दम तोड़ती है। मेरे कंधों पर भूमंडल का भार है, उसे उठाने वाले एटलस के साथ पर मैं वो हूँ कि कभी गरदन नहीं मोड़ता, कंधे नहीं डालता, उन्हें कभी बदलता तक नहीं।

कंधे डाल दूँ तो गजब हो जाए, दुनिया लड़खड़ाकर गिर पड़े, जमाने का दौर बंद हो जाए। पर मैं कंधे नहीं डालता, न डालूँगा। मैंने निरन्तर निर्माण किया है, विध्वंस न करूँगा। यदि करना हुआ तो पुनर्निर्माण करूँगा जिसके लिए मुझे थकान नहीं महसूस होती, कभी अलकस नहीं लगती, रोआँ–रोआँ फड़कता रहता है।

मेरे निर्माण की परिधि की व्यापकता अनंत है, उदयाचल से अस्ताचल तक, क्षितिज के छोरों तक। हजारों वर्ष पहले कलयुग भी जब अभी अंतराल के गर्भ में था, मैंने नदियों के बहाव रोक दिए, बहाव जो अभी ताजा थे, प्रखर प्रकृति वेग से प्रेरित। बहाव रोक कर सविस्तृत ह्रद बनाए, जिन पर पर्जन्य विरहित भूमि की उर्वरा शक्ति

अवलंबित हुई। बढ़ते हुए समुन्दर का मैंने जल सुखाया, दलदलों को ठोस जमीन का जामा पहनाया और उन पर फसलों की हरी धानी क्यारियाँ दौड़ाई।

कश्मीर का नाम लेते ही हृदय में जो आनंद की लहरें उठने लगती हैं उसकी नम दलदल भरी भूमि किसने सौन्दर्य से रँगी? किसने झेलम के तटवर्ती आकाश को सुरभि बोझिल वायु से मदहोश किया? किसने उसके केसर की फैली क्यारियों में जादू की मिट्टी डाली? कल्हण की कलम से पूछो, किसने–किसने ?

दिन सोता था, रात सोती थी, पर मैं जागता था, जब नीलनद की धारा छाती पर चट्टान ढोती थी, दखिनी पहाड़ी में मेरी चट्टान। इन चट्टानों को मैंने नील की सबल छाती से उठाकर अपनी छाती पर रखा, अपने बाजूओं पर, कंधों पर, गरदन पर और चढ़ा दिया पाँच सौ फुट ऊपर आसमान की छाती छेद, गीजा और सक्कारा के मैदानों में, अपनी, जिन्दा छातियों से, इसलिए कि मुर्दा छातियाँ उस धूप से भूनी बालू में पिरामिडों की छाया में चिर निद्रा में सोएँ।

मैंने पहाड़ काटा, चट्टानें खोदकर ताँबा निकाला, सोना, चाँदी, लोहा, कोयला, हीरा। पाताल में घुसकर जब तपता दिन, नरक की रातों की अँधियारी लिए उन खानों में उतरता, मैं पत्थर काटता होता, अपने मालिकों के लिए था। कोलार की खानों से अमरीका की नई दुनिया तक। जमीन की छाती फाड़–फाड़कर मैंने चमकता, लोहे सा कठोर हीरा निकाला और दक्षिणी अफ्रीका में आज भी निकाले जा रहा हूँ पर उसकी चमक के नीचे मेरी काली अँधियारी जिन्दगी है।

मेरी खोदी जमीन को घेरे शेर से खूँखार कुत्ते खड़े रहते हैं, मुझे घूरते, मेरी एक–एक हरकत पर छलाँग मारते । अगर मैं अपनी जगह बुत बनकर खड़ा न रहा होता तो पीठ फेरते ही पिंडलियाँ उनके मुँह में होती और उनके घेरे से बाहर निकलते ही वह अमानुष अपमान जिससे अंतर खुलकर चमक जाए। मैं हीरा निकालता हूँ।

रोम का वह कोलोसियम, मैंने अपने हाथों खड़ा किया, जैसे कभी एथेन्स में अरीना का निर्माण किया था जहाँ मेरे–से गरीबों को श्रीमानों की दृष्टि सुख के लिए शेरों से लड़ना होता था। वैसे ही स्पेन के वे खूनी अखाड़े भी जहाँ लड़कों को साँड़ों से मौत की बाजी लगानी होती थी।

बाबा आदम के वनों को काट मैंने पत्थर की सी जमीन खोदकर नरम कर डाली। उसे जोत बोकर हरा कर दिया। विजयों से लौटे हुए रोमन जनरलों की प्रांतीय भूमि, मीलों फैले खेत मैंने बोए–काटे, सामंतों की दुनिया मैंने बसाई जिनकी गहराइयों में आदमी को भूखे शेर की भाँति कठघरों के पीछे रखा जाता था।

अफ्रीका के जंगलों से बनैली हालत में डाके, चोरी, साजिश द्वारा मैं खींच ले जाया गया एक दूर की अनजानी दुनिया में, समुंदर पार। पर मेरे लिए स्वदेश–विदेश की परिपाटी न थी। मैंने वहां भी गोरी दुनिया का पेट भरा, अपना पेट काटकर, संसार को अघा देने वाली उपज के बीच भी भूखा रहकर। फिर वहीं, उनके लिए आसमान चूमने वाली इमारतें खड़ी कीं, जहाँ एक–एक गाँव–नगर की संख्या बसी, मेरी झोपड़ियों से घृणा करने वाली दुनिया।

मैं ज़मीन को खोदकर, उसे जोत–बोकर सोना उगलने पर मजबूर करता था, वह सोना खुद मेरे लिए न था। मेरे लिए सोना आग था जिसे छूकर मुझे शूल की नोक पर चलना होता। मुझे उस फसल को काटकर, दा–उसाकर, राशि कर देना था पर उसका एक दाना भी छूना मेरे लिए मौत का परवाना था, तिल–तिल करने का, उन पीड़ाओं का जिनके लिए मनुष्य की मेधा ने एक से एक जतन प्रस्तुत किये थे। हाँ, मुझे उस कटे खेत की ज़मीन पर अब चिड़ियों की भाँति फिरने का अधिकार था जहाँ कभी कोड़ों की चोट सीने पर झेलते हुए मैंने अन्न की राशि खड़ी की थी कि मैं अपना आहार, मिट्टी में पड़े कणों को चुन लूँ। तब कणाद का तप मैंने पूरा किया।

हाँ, मैं उस जमीन के साथ बँधा जरूर था। उस ज़मीन की तरह मैं भी निरीह था, ज़मीन बेची जाती थी, मैं भी उसी के साथ, मय जानवरों के बिक जाता था। न ज़मीन को अपनी उपज खाने का हक था, न मुझे। प्राचीन काल से ही मेरी संज्ञा घर के मवेशियों की थी। प्राचीन ऋषि तक ने जानवरों की ही भाँति मुझ पर दया करने की ताकीद की थी। गृहिणी को ऋषि ने मेरे प्रति करूण होने की हिदायत देते हुए चौपायों के साथ रखा, उसे गृह के सभी जनों के साथ दोपायों–चौपायों की साम्राज्ञी होने का आशीर्वाद दिया–साम्राज्ञी द्विपदश्चतुष्पदः।

जंगल काटकर मैंने गाँव खड़े किए, कस्बे और नगर। मैं भूमि के साथ बिकता रहा। फिर धीरे–धीरे मैंने विशाल जनसंकुल नगर बनाए जिनमें कारखानों– मिलों का दैत्य कोलाहल के साथ धुआँ उगलने लगा। उनकी चिमनियों की छाया में रात–दिन मैं पसीना बहाता रहा। जब मशीन की चपेट में आकर मैं अपाहिज हो जाता, मेरा नाम रजिस्टर से खारिज कर दिया जाता। जब मैं उसकी चोट से गिरकर फिर न उठ पाता तब सड़क के कूड़ों में डाल दिया जाता। मेरी मृत्यु की जवाबदेही किसी की न थी, न मेरे बाल बच्चों के प्रति, न मालिकों की अपनी सरकार के प्रति। मॉन्टेस्क्यू* और मिल* लिखते ही रह गए।

मेरे बाल–बच्चे। उनके न घर थे, न द्वार। मिल की दीवारों की आड़, धुएँ के बादलों की घनी छाया और टाट–फूस–टिन से घिरी मेरी दुनिया जिसमें मैं ही सपरिवार न था, मेरे–से अनेक अभागे थे। और वहाँ का पापमय घिनौना जीवन, शर्मनाक नरक के कीड़ा का। उधर ऊँची दुनिया में, संसदों में, पाप के विरूद्ध कानून बनते रहे और कानून बनाने वालों की इधर की दुनिया में उनके कानूनों को चरितार्थ करते हम कृतकृत्य होते रहे। चारों ओर अँधेरा था, घरौंदों के पीछे, उन मकान कहलाने वाले घरौंदों के जहाँ दिन–रात की मजदूरी से थका–माँदा जीवन बिना लहराए टकराता और टकरा–टकराकर टूट जाता था और ये घरौंदे उसी तेजी से गला–पचा जीवन उगलते थे जिस तेजी से दीवारों के पीछे कारखाने में तैयार माल।

बैलगाड़ी से रथ बने, रथ से महारथ। उधर हमारी मिलों ने क्रांति की और हमने भाप से चलने वाले इंजन गढ़ दिए, इंजन जो जमीन पर दौड़ते थे, पानी पर तैरते थे। बैलगाड़ी रेल बनी और नाव–जहाज आसमान चूमती लहरों पर तूफानों में नाचने लगे। पर मैं वहीं का वहीं रह गया।

मैंने जैसे मोटर–रेल से जमीन नापी थी वैसे ही अब अपने ही बनाए हवाई जहाजों से बाजों के छक्के छुड़ाने लगा पर जैसे मैं उनका कोई नहीं। भला उनके भीतर बैठने वालों से मेरा क्या वास्ता? नाव चलाने वाला मल्लाह नाव पर, उसे अपना कह दिनभर बैठ लेता है, हलवाई अपनी बनाई मिठाई को जब–तब चख लेता है पर मैं अपनी ही जोड़ी बनाई मोटर को, जहाज को, क्या अपना या उनका कह एक मिनिट को भी भोग सकता हूँ?

इनके लिए मैं पहाड़ों से लोहा, कोयला, टिन खोदता हूँ, तेल और पेट्रोल जिनके विस्फोट से अनेक बार मुझ जैसों की दुनिया पलट जाती है। जिनके लिए धर्म का झंडा फहराने वाले, जालफरेब करते हैं, कानून बनाते हैं, कानूनी शर्तनामों के नाम पर खूनी लड़ाइयाँ लड़ते हैं।

खूनी लड़ाइयाँ। इनके लिए भी मैं अपना खून–पसीना एक करता हूँ। लड़ाइयाँ धर्म की हैं, अधर्म की हैं, गुस्से और बर्दाश्त की हैं, हक और नाहक की हैं, लड़ाई और अमन की हैं, दोनों को मिटा देने की भी हैं, और कई किस्म की हैं जैसा उनकी किस्म–किस्म की परिभाषा बनाने वाले कहते है। मैं नहीं जानता उनकी परिभाषाएँ। पिस्सू और खटमल तक की जानें निकलते देख एक बार घबरा उठनेवाला मैं दानव की भाँति दिन–रात चलती मशीनों से संहार के साधन सिरजाता जा रहा हूँ क्योंकि मेरा कारखाना हथियारों का है, तोप–बंदूकों का, गोले–बारूद का, बम का।

पिस्सू–खटमल की चोट पर आँसू बहाने वाला मैं आखिर चींटी को चीनी चटाने वालों, कृपालु पिता के नाम पर सेमिनार चलाने वालों का नौकर ही तो हूँ। मुझे इससे क्या कि जिन मशीनों, बन्दुकों, तोपों, जहाजों के टुकड़े–हिस्से बनाता हूँ, वे एक दिन मुझसे ही हाड़–माँस के असंख्य जनों को उड़ा देंगे।सच, इससे मुझे क्या ? मैं तो तेली का बैल हूँ, मुझे कहीं भी नाथ दो, मैं चलता ही जाऊँगा, उन्हीं मशीनों की तरह जिन्हें चलाने वालों के इशारों पर चलना होता है।

---

*मॉन्टेस्क्यू : मॉन्टेस्क्यू फ्रांस के एक राजनैतिक विचारक, न्यायविद तथा उपन्यासकार थे। उन्होंने शक्तियों के पृथक्करण का सिद्धान्त दिया। वे फ्रांस में ज्ञानोदय (एनलाइटेनमेन्ट) के प्रख्यात प्रतिनिधि माने जाते हैं।

*मिल : जे.एस. मिल एक सामाजिक दार्शनिक थे। ये व्यक्तिगत अधिकारों व स्वतंत्रता के पक्षधर थे। ऑन लिबर्टी इनकी प्रमुख पुस्तक थी।

सुंदर आसमान पर पुल बाँधने वाला मैं अपनी कुव्वत आप नहीं जानता। एक बार भी मैं नहीं सोचता कि मेरे जिन हाथों में भरे मैदानों को बगैर खून बहाए सुला देने का जादू है उनमें मसीहा का भी असर है। काश, मैं इसे समझ लेता। काश, मैं इसके राज को अपने सामने बिखरे मृत्यु के इन साधनों को सिरजते इन्हीं की भाँति साफ देख लेता।

संसार आसमान के छोरों तक फैला हुआ है। धरती का विस्तार क्षितिज के पार तक वैसा ही व्यापक है, जैसा आसमान। रत्नाकर का सौन्दर्य उतना ही अमित है जितना वसुंधरा का और उनके मंथन से शहरों में समृद्धि भरी है, परन्तु वह मेरे लिए क्यों नहीं हैं? मैं पूछता हूँ। मुझमें कभी दानव की शक्ति थी मेरे इस मानव की मज्जा में, मेरी इन शिराओं में फौलाद के तारों की जकड़ थी, पर आज इतना निःसत्व मैं क्यों हूँ, इतना नगण्य और नंगा क्यों?

दुनिया में क्या नहीं? कौन–सी चीज मैंने अपने हाथों पैदा नहीं की? मेरे सहारे कारखाने अमित मात्रा में माल उगलते जा रहे है। मैं तृण से ताड़ बनाता हूँ, तिल से पहाड़, नगर को ढो सकने वाले जहाजों से लेकर सुई तक कोई महान और अदनी चीज नहीं जो मेरे स्पर्श के जादू से जीवन धारण न कर लेती हो। पर यह सब कुछ मेरे लिए क्यों नहीं? मैं इनमें से तिनका तक भी नहीं ले पाता। मैं भूखा और नंगा हूँ पर क्या ये मिलें जिनमें मैं खाने–पहनने का अपार सामान तैयार कर रहा हूँ, मेरा पेट नहीं भर सकतीं, तन नहीं ढंक सकतीं? इसका उत्तर भला कौन देगा, इन्हें जो बनाता है वह या जिनके लिए बनाता हूँ वे?

शब्दार्थ

जीवनबद्ध – जीवन से बँधा हुआ; **कंधे डालना** – पराजय स्वीकार करना; **अवलम्बित** – निर्भर; **कृत होना** – आभारी होना; **कुव्वत** – शक्ति या ताकत; **बनैलापन** – जंगलीपन; **अलकस** – आलस्य; **बुत** – मूर्ति; **कोलोसियम** – रोम का नाट्यगृह; **पर्जन्य** – बादल; **मज्जा** – हड्डी के भीतर भरा हुआ द्रव पदार्थ; **क्षितिज** – जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई दे; **कणाद** – एक ऋषि जो भूमि पर गिरे अन्न के कणों को एकत्र कर स्वयं के भोजन की व्यवस्था करते थे।

अभ्यास

पाठ से

1. मजदूरों के प्रति सहानुभूति क्यों रखनी चाहिए?
2. मजदूर के पारिवारिक जीवन का हाल कैसा होता है? पाठ के आधार पर लिखिए।
3. 'दुनिया में क्या नहीं? कौन सी चीज मैंने अपने हाथों पैदा नहीं की?' इस कथन को ध्यान में रखकर मजदूरों के द्वारा किए गए निर्माण कार्यों को अपने शब्दों में लिखिए?
4. ''दिन सोता था रात सोती थी, पर मैं जागता था।'' का आशय क्या है?

5. पाठ में से उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए जिनमें मजदूरों की विवशता दिखाई देती है?

6. निर्माण के प्रति मजदूरों की निरंतर प्रतिबद्धता किन–किन बातों में जाहिर होती है?

EAP796

पाठ से आगे

1. मजदूर नहीं होते तो हमारी दुनिया के विकास कार्यों का क्या होता? कल्पना कर अपने शब्दों में लिखिए।

2. आज भी देश–विदेशों में कई जगहों पर जानवरों की लड़ाइयों का आयोजन किया जाता है। इन लड़ाइयों में कई बार जानवरों व इंसानों की मृत्यु तक हो जाती है। क्या इस प्रकार के आयोजन उचित है? अपने विचार तर्क सहित दीजिए।

3. फैक्ट्री में काम करते हुए घायल/दुर्घटनाग्रस्त (दिव्यांग) मजदूरों के प्रति मालिकों की क्या–क्या जिम्मेदारियाँ होनी चाहिए?

4. कश्मीर का नाम सुनते ही आपके मन में उसकी क्या–क्या छवियाँ उभरती हैं? चर्चा करके लिखिए।

5. प्राचीन काल में गृहिणियों को ऋषियों द्वारा दी जाने वाली हिदायत 'साम्राज्ञी द्विपदश्चतुष्पदः' में मजदूरों (इंसानों) की साम्यता पशुओं से करना क्या सही था? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

6. 'पिस्सू और खटमल तक की जानें निकलते देखकर एक बार घबरा उठनेवाला मैं दानव की भाँति दिन–रात चलती मशीनों से संहार के साधन सिरजाता जा रहा हूँ; क्योंकि मेरा कारखाना हथियारों का है, तोप–बँदूकों का, गोले–बारूद का, बम का।''

   (क) लेखक ने इन पंक्तियों में किस वैश्विक समस्या की ओर संकेत किया है? यदि यह समस्या ऐसे ही बढ़ती रही तो उससे मानव के अस्तित्व को क्या–क्या खतरे हो सकते हैं?

   (ख) इन खतरों को दूर करने के लिए विश्व स्तर पर क्या–क्या निर्णय लेने होंगे?

EAY3AT

भाषा के बारे में

1. निम्नलिखित दोनों वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और समझिए–

   (क) मैं मेहनतकश मजदूर हूँ।

   (ख) मैंने वहाँ भी गोरी दुनिया का पेट भरा।

   वाक्य 'क' को पढ़ने से आप पायेंगे कि उसका अर्थ आसानी से समझ आता है। इस प्रकार जिस वाक्य का साधारण शाब्दिक अर्थ और भावार्थ समान हो उसे **'अभिधा' शब्द शक्ति** कहते हैं। इससे उत्पन्न भाव को 'वाच्यार्थ' भी कहते हैं।

   वाक्य 'ख' में गोरी दुनिया अर्थात् गोरी रंग की दुनिया की बात न होकर, गोरे लोगों की दुनिया अर्थात् यूरोप को लक्ष्य कर बात कही गयी है। इसमें शब्द के वाच्यार्थ या मुख्यार्थ से भिन्न उसका अन्य अर्थ प्रकट होता है। इसमें उत्पन्न भाव को **'लक्ष्यार्थ'** कहा जाता है और इस शब्द शक्ति को **'लक्षणा'** कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में किस शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है, पहचानकर लिखिए—

(क) रमेश के कान नहीं है। (ख) सीता गीत गाती है।
(ग) मोहन बैल है। (घ) हमारी मिलों ने क्रांति की।
(ङ) चौकन्ना रहना अच्छी बात है।

योग्यता विस्तार

1. मिस्र स्थित गीज़ा का पिरामिड संसार के सात आश्चर्यों में से एक है जिसके निर्माण के समय ज्यादा सुविधा युक्त उपकरण एवं संसाधन न होते हुए भी मजदूरों के अथाह परिश्रम का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ये सात आश्चर्य कौन–कौन से हैं? इनके बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

EB7YCG

2. अपने आसपास रहने वाले किसी मजदूर से बातचीत करके उसकी पूरे दिन की दिनचर्या के बारे में पता कीजिए।
3. मजदूरों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए सरकार द्वारा क्या–क्या योजनाएँ बनाई गई है? चर्चा करके सूची तैयार कीजिए।

पाठ में आए विविध स्थानों के बारे में थोड़ा और पढ़िए—

गीजा

विश्व के सात आश्चर्यों में से एक, मिस्र के पिरामिड के लिए प्रसिद्ध स्थल, गीजा के पिरामिड। सर्वाधिक प्राचीन, भव्य और अत्यधिक उन्नत तकनीक से बने इन पिरामिडों को लगभग ढ़ाई हजार वर्ष ईसा पूर्व बनाया गया था। 450 फीट की ऊँचाई तक अत्यंत विशाल पत्थरों को कैसे पहुँचाया गया होगा, यह आज भी नहीं जाना जा सका है। मानवीय श्रम का अद्‍भुत उदाहरण जो ऐसे युग में बना जब मशीनें नहीं हुआ करती थीं।

सक्कारा

मिस्र स्थित इस स्थल पर भी प्राचीन पिरामिडों के अवशेष हैं। सक्कारा के पिरामिड सीढ़ीदार हैं जबकि गीजा के समतल पार्श्व वाले त्रिभुजाकार हैं।

कोलोसियम

रोम के इटली शहर स्थित इस 'रंगशाला' को ईस्वी सन् 70 में रोम के शासकों ने बनाया था जो स्थापत्य कला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण था। यहाँ योद्धा अपनी युद्ध कला और मल्ल विद्या का प्रदर्शन करते थे। हिंसक पशुओं से भी उनके मुकाबले आयोजित किए जाते थे। अब यह खंडहर रूप में पर्यटकों के लिए एक दर्शनीय स्थल है।

कोलार

भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित यह स्थान बैंगलोर से 60 मील की दूरी पर है। यहाँ सोने की खाने हैं।